।। ओ३म् ।।

प्रभु से विनय

हे प्रभु ! जब तेरी महिमा का गुणगान गाया जाता है तो मार्ग में विचरने वाले पक्षीगण और मांस भक्षण करने वाले सिंह जैसी योनी भी तेरी महिमा का गुणगान पाकर मुग्ध हो जाते हैं। हे प्रभु ! यह तेरी अलौकिकता है। प्रभु ! चाहे मृत-लोक में रमण करने वाले प्राणी हों, जल में रमण करने वाले हों, सूर्य लोक में रमण करने वाले हों, चन्द्र लोक में रमण करने वाले हों, ध्रुव और बृहस्पति लोकों में रमण करने वाले हों, परन्तु हे प्रभु उन सबको आपका दिया हुआ जीवन है, आप उन सबका पालन-पोषण कर रहे हैं। परमदेव ! हमें भी जीवन दो, हम जीवन चाहते हैं, प्रभु ! हम उस सृष्टि में पहुँच जाएँ जहाँ प्रभु ! आपकी महिमा का सूर्य अस्त नहीं होता। प्रभु ! यदि हमारे नेत्रों से, हमारी अन्तरात्मा से, हमारे अन्तःकरण से आपकी महिमा का अंकुर भी चला गया तो मानो प्रभु ! हम मृत्यु को प्राप्त हो गए। हे प्रभु ! हमें मृत्यु न दो, हम उन्नति चाहते हैं, संसार में सतोगुणता चाहते हैं, आज उन पदार्थों का पान करना चाहते हैं जिनसे हमारा ज्ञान ऊपर आ जाए और हमें शुद्ध और पवित्र बनाता चला जाए। हे परमदेव ! हमारा कल्याण करने वाले विष्णु ! तू आ और हमारा कल्याण कर, आपको वेदों ने विष्णु कहा है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अँक : 510 समग्र अँक : 585
वर्ष : 43 समग्र वर्ष : 49

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय		पृष्ठ संख्या
1.	प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2.	अनुक्रम		4
3.	विष्णु की विवेचना	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-20
4.	प्राणायाम का महत्त्व (1)	पूज्यपाद-गुरुदेव	21-35
5.	वाणी	पूज्यपाद-गुरुदेव	36
6.	ऋषियों के उद्‌गार	पूज्यपाद-गुरुदेव	37
7.	Conception of Yajna	Pujyapad Gurudev	38-39
8.	दान, पुस्तकों की सूची, प्राप्ति के स्थान व सूचना आदि		40-42

सूचना

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज द्वारा संस्थापित वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) दिल्ली को दानदाताओं द्वारा दान देने पर आयकर विभाग की धारा 80 जी के अन्तर्गत छूट 26-9-2014 को मिल गई है जो कि 2015-2016 से लागू है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

सभी को होली पर्व, नव सम्वतसर 2072 व रामनवमी की हार्दिक शुभकामनाएँ

शृङ्गीऋषि बेवसाईट
Website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

।। ओ३म् ।।

विष्णु की विवेचना

जीते रहो !

देखो मुनिवरो ! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी और यज्ञोमयी स्वरूप माने गए हैं याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है, और वह प्रायः उसी में वास करता रहता है। तो वह परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप, क्योंकि वह निर्माण करने वाला है। इस संसाररूपी यज्ञशाला का उसी ने निर्माण किया है, मानो जिसमें होता है, अध्वर्यु है, उद्गाता, ब्रह्मा और पुरोहितजन हैं, जिनके द्वारा यह संसाररूपी यज्ञशाला संचालित होती है अथवा उसका क्रियाकलाप चल रहा है। तो विचार आता है कि वह परमपिता परमात्मा अनुपम हैं और एक-एक कण-कण में वह व्याप्त हैं। कोई भी स्थली ऐसी नहीं है जहाँ वह परमात्मा न हो। साधक जब अपनी स्थली पर विद्यमान होता है तो साधक यही विचारता है कि मैं कहाँ जाऊँ, जहाँ मेरा मन जाता है, जहाँ भी प्रतिभा जाती है वहीं वह मेरा परमपिता विद्यमान है। तो कोई स्थली ऐसी नहीं जहाँ हम पापाचार, अनाचार के विचार अपने मन में ला सकें। यदि हम गम्भीरता से उस परमपिता परमात्मा को जान लेते हैं, परन्तु जब उसे नहीं जान पाते तो अज्ञान व्याप्त हो जाता है। तो वह अज्ञान नहीं रहना चाहिए।

परमपिता परमात्मा विष्णु हैं

इसलिए वेद का मन्त्र कहता है, यज्ञनम् ब्रह्मा यज्ञसुता क्या वह जो परमपिता परमात्मा है और वह यज्ञोमयी स्वरूप है और वह यज्ञमयी माना गया है। परमपिता परमात्मा ने जब संसार का सृजन किया और साधकों ने इस संसार को विचार विनिमय किया तो इस संसार में भौतिकवाद और आध्यात्मिकवाद दोनों ही रूपों से इसका निरूपण किया और यह विचारा है कि वह परमपिता परमात्मा ज्ञान और विज्ञान में निहित रहने वाले हैं। और जब वैज्ञानिकों ने इसको विचारा तो तीन प्रकार के परमाणुओं को ले करके मानो इससे विज्ञान की रचनाओं में लगे, जितना भी विज्ञान है चाहे वह मानो अस्त्रों-शस्त्रों का निर्माण है, चाहे और भी यन्त्रों का निर्माण है, चाहे वह अन्तरिक्ष में रमण करने वाला यान हो, चाहे वह पृथ्वी के गर्भ में और समुद्रों की तरंगों में रमण करने वाला क्यों न हो परन्तु उसमें तीन प्रकार की प्रतिभा होती है, परमाणु होते हैं और उन्हीं परमाणुओं से नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करता है। सबसे प्रथम मानो तेजोमयी, तरलत्व और गुरुत्व यह तीन प्रकार के परमाणु हैं। इन परमाणुओं को गति देने वाली वायु है और अवकाश में यह रमण करते रहते हैं जिसे अन्तरिक्ष कहते हैं। तो मेरे प्यारे ! विज्ञानवेत्ता जब पृथ्वी के गर्भ में जाते हैं, तो नाना प्रकार का खाद्य और खनिज इन्हें दृष्टिपात आने लगता है। जब अन्तरिक्ष में रमण करते हैं तो परमाणु एक-दूसरे में संघर्ष होते हुए दृष्टिपात आते हैं। परन्तु जब स्वः में जाते हैं तो वहाँ परमाणु अपने में लय हो जाते हैं। तो मेरे प्यारे ! देखो, ऋषि-मुनियों ने एक-एक वेद के मन्त्रों के ऊपर विचार-विनिमय किया है, आज मैं इस सन्दर्भ में तुम्हें नहीं ले जा रहा हूँ। केवल विचार-विनिमय यह कि वह परमपिता परमात्मा विष्णु है।

हमारे यौगिक आचार्यों ने जब दो शब्दों पर विचार-विनिमय किया। एक शब्द रूढ़ि होता है तो एक यौगिक होता है। जैसे विष्णु शब्द है, यह यौगिक शब्द है और विष्णु का शब्द वहाँ प्रयोग किया जाता है, जहाँ रक्षा का सम्बन्ध है, जहाँ भी रक्षा का मूलक है वही यौगिकवाद है। मेरे प्यारे ! देखो, वह विष्णु नाम हमारे यहाँ परमपिता

परमात्मा का जो रचना करता हुआ पालन कर रहा है। और विष्णु नाम माता का है, जो हमारा पालन करने वाली है और विष्णु नाम सूर्य का है जो ऊर्ज्जा दे करके प्रकाशक बना रहा है। और विष्णु नाम राजा का है जो पालक है, जो प्रजा में अनुशासन और स्वयं अनुशासन में रहता है। और यज्ञोमयी विष्णु, विष्णु नाम यज्ञ का है क्योंकि याग नाना प्रकार की ऊर्ज्जा को मानो शान्तम् ब्रह्मा वर्णस्सुतम वह प्रदूषण को समाप्त करता है, ऊर्ज्जा को देता है। तो यहाँ आत्मा का नाम भी विष्णु है क्योंकि आत्मा शरीर में जब तक है यह चेतनित रहता है, शरीर क्रियाशील रहता है, परन्तु जब आत्मा इससे निकल जाता है तो क्रियाशून्य हो जाता है। इसी प्रकार विष्णु शब्द कहाँ आता है? **विष्णु कहते हैं, जो पालन करने वाला है।** पालना के मूल में कौन है, विष्णु है। तो इसीलिए विष्णु की याचना करते रहते हैं, विष्णु भवितम् ब्रह्मा विष्णु। वेद का वाक् बेटा ! देखो, विष्णु की महिमा का वर्णन करता है। हमारे आचार्यों ने बेटा ! देखो विष्णु शब्द का बड़ा ऊर्ध्वा में विश्लेषण किया है। परन्तु आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नहीं केवल यह कि यज्ञोमयी विष्णु।

ऋषि मुनियों का याग पर चिन्तन

मेरे प्यारे ! देखो राजन् नमम् ब्रव्हा मैंने तुम्हें कई कालों में वर्णन करते हुए कहा है, क्या प्रत्येक रूप में बेटा ! यज्ञ के ऊपर ऋषि-मुनियों ने बड़ा अनुसन्धान किया। और उन्होंने रूढ़ि से यौगिक और यौगिक से रूढ़ि में दोनों को एक-दूसरे में कटिबद्ध किया है। और वह कटिबद्ध क्या आज मैं तुम्हें एक ऋषि के आसन में ले जाना चाहता हूँ जहाँ ऋषि-मुनियों की चर्चाएँ होती रही हैं और उनका विचार-विनिमय होता रहा है बेटा ! याग के सम्बन्ध में। याग को कहीं आध्यात्मिक याग में तो कहीं भौतिकवाद को आध्यात्मिकवाद में कटिबद्ध किया। क्योंकि भौतिक और आध्यात्मिक दोनों एक-दूसरे के पूरक कहलाते हैं अथवा एक-दूसरे में ओत-प्रोत हो करके अपनी क्रियाओं में रत्त होते हैं। तो विचार आता रहता है बेटा ! आध्यात्मिकवाद और भौतिकवाद दोनों के रूपों में ही मानव अपने में विचार विनिमय करता रहा है। राष्ट्रवाद

में जब हम मानो राष्ट्र में जब आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनों उन्नत होते हैं तो मुनिवरो ! देखो राष्ट्र अपने में भव्यता को प्राप्त होता है। और वही विज्ञान बेटा ! देखो जब विद्यालयों में आचार्यों के समक्ष जाता है तो आचार्य ब्रह्मचारियों को याग के द्वारा मृत्यु से पार करा देते हैं। मृत्युञ्जय ब्रह्मा यागाः कि आचार्य कहता है कि हे ब्रह्मचारी आओ, तुम्हें मैं मृत्यु से पार करना चाहता हूँ। बेटा ! वह याग के पात्रों से उसका निर्णय कराते रहते हैं। आज मुनिवरो ! देखो मैंने तुम्हें कई कालों में नाना प्रकार की चर्चाएँ की हैं अथवा विचार-विनिमय किया। आज मैं तुम्हें विशेष विचार तो देना नहीं चाहूँगा। केवल यह कि हमारा वेदज्ञम ब्रह्मा वह परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप हैं। वह सृष्टि का रचनाकार है और विष्णु है, पालन कर रहा है।

आत्मा का नाम विष्णु है

मेरी प्यारी माता का नाम विष्णु कहलाता है क्योंकि माता जब लोरियों का पान कराती है तो वह पालक बनी हुई है और पालना कर रही है तो उसका नाम विष्णु है। मेरे प्यारे ! विष्णु नाम सूर्य का है, प्रातः काल में मानो देखो रात्रि को अपने गर्भ में धारण कर लेता है, अन्धकार को अपने में धारण करके मानो देखो ऊर्ज्जा दे करके प्रकाश देता है, वह प्रकाशक है और प्रकाश ही पालना का मूल है। मेरे प्यारे ! देखो पालना के मूल में वही है और मुनिवरो ! देखो जब यह अमृतम् ब्रह्मा यज्ञ ब्रव्हे वह परमपिता परमात्मा का याग मुनिवरो ! आत्मा जब इस शरीर में व्याप्त रहता है तो यह मानो यह नाना प्रकार के क्रियाकलापों में रत्त रहता है। परन्तु जब आत्मा इससे निकल जाता है, आत्मा व शरीर का दोनों का विच्छेद हो जाता है तो शरीर में नेत्र होते हुए वह प्रकाश से शून्य रहता है, वाणी होते हुए वह वाक् नहीं उच्चारण कर सकता, नासिका होते हुए सुगन्ध को नहीं ग्रहण कर रहा है, नेत्र होने से 'दृष्टि नहीं प्राप्त कर रहा है। बेटा ! देखो, कौन है पालक, कौन है मुनिवरो ! जो इसमें वास करके चैतन्य बना हुआ है, वह आत्मा है। मेरे प्यारे ! ऋषि कहता है कि आत्मा को जानने का प्रयास करो। **हे मानव तू प्रातःकाल से सायँकाल तक उदर की पूर्ति करने में लगा रहता**

है, नाना प्रकार के क्रियाकलाप करता रहता है, परन्तु जिसके कारण ये तेरा यन्त्र गति कर रहा है, और जिससे तू गतिवान हो रहा है, उस आत्मा के लिए कोई प्रयत्न नहीं करता, यह अज्ञान है, तो मानो देखो आत्मा को जानने के लिये भी मानव को कोई न कोई अपने में, मानो अपनेपन को धारण करना चाहिए। तो विचारवेत्ताओं ने कहा, ब्रह्मणे आत्माम् भूतम् ब्रह्मा। इस आत्मा को जानने का प्रयास करो। मेरे प्यारे ! देखो, आत्मा विष्णु है, आत्मा सारस्वत है।

विष्णु अक्षय क्षीर सागर में

मुझे एक समय बेटा ! देखो मैं, हम कुछ ऋषि-मुनियों की चर्चाओं में अपनेपन में रत्त हो गये तो महर्षि कौटिल्य ऋषि ने कहा था, कौटिल्य महर्षि ने कहा कि यह जो विष्णु है, यह आत्मा है, मानो देखो, यह विष्णु अक्षय क्षीर सागर में रहता है। तो उन्होंने बेटा ! एक अलंकार को मानो एक शब्दों में कटिबद्ध किया। उन्होंने कहा कि विष्णु चार भुजों वाला है और वह अक्षय क्षीर सागर में रहता है। अक्षय क्षीर सागर नाम मानो देखो नारद अपनी वाणी को लिए हुए रहता है और गन्धर्व गान गा रहा है! मेरे प्यारे ! लक्ष्मी चरणों में ओत-प्रोत है। वेद का ऋषि इस सम्बन्ध में उद्गीत गा रहा है। मेरे प्यारे ! देखो, आत्मा जब अक्षय क्षीर सागर में विद्यमान होता है, जब यह **अक्षय क्षीर सागर नाम बेटा ! ज्ञान और विवेक को कहा जाता है।** जब ज्ञान और विवेक हो जाता है, तो जो नारद है, **नारद नाम बेटा ! मन का है,** जो अपनी चंचलता को ले करके अपनी वीणा को शान्त कर देता है। चंचल रूपी वीणा को लिए हुए यह आत्मा रूपी विष्णु के चरणों में रहता है और **गन्धर्व नाम बुद्धि का है** यह गान गाने लगती है विष्णु का। मेरे प्यारे ! शेषनाग की शय्या पर विद्यमान हैं। शेष नाग कौन है बेटा ! **काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह इत्यादि यह शेषनाग है।** इसको देखो योगी अपने नीचे दबाकर के बेटा ! उसमें विश्राम करता है। मेरे पुत्रो ! देखो, जब विश्राम करता है, तो लक्ष्मी चरणों में ओत-प्रोत हो जाती है और वह वन्दना करने लगती है बेटा ! जिस लक्ष्मी के रूप में मानो देखो संसार अपने में ही मानो देखो अपनी नाना प्रकार की

वृत्तियों में रत्त रहता है। तो मुनिवरो ! देखो **विष्णु नाम आत्मा का है।** इस आत्मा को जानने वाला वह **आत्मवेत्ता** बन करके बेटा ! आत्मा की पुकार में आत्मिकता को अपने में प्राप्त कर लेता है। तो विचारवेत्ताओं ने कहा, आत्माम् भूतम् ब्रह्मा आत्माम् देवत्वा विष्णु—यह आत्मा विष्णु है। जो मुनिवरो ! देखो आत्मा को जो नहीं जानता, वह वृति कहलाता है। वह अज्ञान में रत्त रहता है। यह अरे ! कैसा आश्चर्य है कि पंच महाभूतों के पंचलोक में रहने वाला मानो देखो इस पंजीकरण में आत्मा विद्यमान है। परन्तु आश्चर्य यह कि उसी शरीर को नहीं जानता जिसमें ये पंच महाभूत में विद्यमान रहता है। क्योंकि इसलिए नहीं जान पाता क्योंकि यह परोक्ष है, यह सारस्वत है और यह बाह्य जगत से, बाह्य इन्द्रियों से वर्णन नहीं किया जाता।

विष्णु नाम सूर्य का है

तो मेरे प्यारे ! देखो आत्मा का नाम विष्णु है और विष्णु नाम सूर्य का है। सूर्य प्रातःकाल में उदय होता है, प्रकाश को ले करके आता है। रात्रि को अपने गर्भ में धारण कर लेता है। यहाँ बेटा ! रात्रि नाम अहिल्या को कहा गया है। और देखो गौतम नाम चन्द्रमा को कहा गया है। गौ कहते हैं बेटा ! देखो गौ कहते हैं अंधकार को और तम कहते हैं प्रकाश को। तो गौतम देखो इस रात्रि के शृंगार को, अंधकार को अपने में धारण करता रहता है। मेरे पुत्रो ! जब धारण करता है, तो अहिल्या का नाम रात्रि है और इन्द्र मानो देखो इनको इन्द्र दोनों को वह अप्रतम् ब्रह्मा देखो यह चन्द्रमा गदेला बन जाता है और रात्रि मानो देखो उसमें, इन्द्र के गर्भ में प्रवेश हो जाती है। तो मेरे प्यारे ! यहाँ इन्द्र नाम सूर्य का है और चन्द्रमा नाम गौतम का है। रात्रि को अहिल्या कहा जाता है। तो वेद का ऋषि कहता है अलंकारम भूतम ब्रव्हे इस अलंकारिक भाषा को जानना चाहिए। **अलंकारों को मानो साहित्यिक रूप नहीं देना चाहिए** न वह साहित्य रहेगा और न वह अलंकार रहेगा। तो इसलिए हमें विचारना चाहिए कि हमारा देखो विष्णु नाम सूर्य का है जो विष्णु देखो नाना प्रकाश को ले करके आता है। रात्रि को अपने में धारण—अंधकार को अपने में नष्ट कर देता है और प्रकाश में ला

देता है समाज को और मानो यह जगत संसार में निहित हो जाता है। तो विचारवेत्ताओं ने कहा कि विष्णु ब्रहे यह प्रातःकाल से ले करके सायँकाल तक मेरे प्यारे ! नाना प्रकार की ऊर्ज्वा बिखेरता रहता है और कहीं यह पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार के खनिज और खाद्य को तपाता रहता है और कहीं जल को शक्तिशाली बनाता है तो कहीं स्वर्ण जैसी धातु का निर्माण कर रहा है। कहीं रत्नों की धातु का निर्माण हो रहा है। हे माँ वसुन्धरा, तू प्रथम ब्रह्मा लोकाम् तू वसुन्धरा है, मानो तेरे गर्भ में नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थ विद्यमान रहता है। तो मेरे प्यारे ! देखो कौन—वह सूर्य निर्माण कर रहा है। रत्नों का निर्माण हो रहा है। कहीं जल को शक्तिशाली बनाया जा रहा है चन्द्रमा व सूर्य की किरणों के द्वारा वही वाहनों में क्रियाकलाप कराता रहता है, वाहन गति करने लगते हैं। उसी जल की सहायता से वह जल सूर्य की नाना प्रकार की किरणों से वह पालक बना हुआ है। इसलिए हमारे यहाँ विष्णु नाम बेटा ! सूर्य को कहा गया है।

राजा का नाम विष्णु है

तो वेद का ऋषि कहता है कि सम्भव ब्रव्हे देवाऽम्। मुनिवरो ! देखो वह विष्णु नाम राजा का है। कौन से राजा का नाम विष्णु है? आओ बेटा ! देखो आज मैं तुम्हें त्रेता के काल में ले जाना चाहता हूँ जहाँ बेटा ! देखो राम प्रातःकालीन बेटा ! याग करते थे। क्योंकि याग कर्मकाण्ड की पद्धति में सर्वश्रेष्ठ एक क्रियाकलाप माना गया। जो अग्नि देवताओं का मुख है और देवता अग्नि के मुख में मानो जो चरू, साकल्य प्रदान किया जाता है वह देवताओं को प्राप्त होता है। देवताजन उसे अपने में ग्रहण करते हैं। पृथ्वी ग्रहण करती है तो नाना प्रकार के व्यंजनों वाली बन जाती है। वनस्पतियाँ पान करती हैं तो नाना प्रकार का औषध देती हैं। नाना प्रकार के रसों में रसित बन जाती हैं। तो विचार आता है कि यह अप्रतम है। मेरे प्यारे ! देखो अम्रहा कृति देवाः तो वसुन्धरम् ब्रह्मा लोकाम् वाचस्सुतम देवत्वाः। तो मेरे प्यारे ! देखो यह विष्णु ब्रह्मा ब्रव्हे यह हमारे यहाँ मुनिवरो ! देखो नाना प्रकार की आभा में परणित करने वाला यह जगत है। और मुनिवरो ! देखो, राजा के राष्ट्र में राजा का

नाम भी विष्णु है। तो मुनिवरो ! देखो राजा, देखो मुझे भगवान् राम का जीवन जब स्मरण आता है तो प्रातःकालीन वह अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हैं। नाना ब्रह्मवेत्ता एक स्थली पर हैं। एक पंक्ति लगी हुई है। ब्रह्मवर्चोसी की एक पंक्ति लगी हुई है। ब्रह्मचारियों की द्वितीय पंक्ति लगी हुई है। मेरे प्यारे ! देखो तीन प्रकार के ऋषियों का आगमन होता रहता है।

ब्राह्मण की विवेचना

सबसे प्रथम ब्रह्मवेत्ता वह है जो ब्रह्म को अपने में अपने को ब्रह्म में स्वीकार करता है। मेरे प्यारे ! देखो ब्रह्म को अपने में ही दृष्टिपात करता रहता है और **द्वितीय ब्रह्मवर्चोसी** है जो ब्रह्म वर्चस्सुतम जो ब्रह्मवर्चोसी बेटा ! देखो एक ऋषि जब प्रश्न करता है कि ब्रह्मवेत्ता कौन है, ब्रह्मवर्चोसी कौन है? मुनिवरो? वह कहता है ब्रह्मवर्चोसी जो ब्रह्म को चरता है अथवा ब्रह्म को जो दुहने वाला है जैसे कामधेनू गऊ को मानो दुह करके उसके दुग्ध को अपने में धारयामि बनाता है, पौष्टिक बनता है। इसी प्रकार देखो ब्रह्मवर्चोसी वह जो ब्रह्म की आभा और उसकी सृष्टि को निहारता रहता है और अपने में मानो उसका व्यवधान करता रहता है तो वह ब्रह्मवर्चोसी है।

वेद कहता है कि **ब्रह्मचारी कौन है?** वह कहता है कि ब्रह्मचारी वह जो अपने ब्रह्मवर्चोसी की रक्षा करता है। उन्होंने पुनः कहा कि ब्रह्मचारी कौन है? उन्होंने, द्वितीय उत्तर देने वाला देता है कि ब्रह्मचारी वह है जो ब्रह्म और चरी को जानने वाला है। ब्रह्म कहते हैं परमात्मा को, चरी कहते हैं प्रकृति को—जो दोनों को अंगों और उपांगों से जानने वाला है, वह ब्रह्मचारी है। उन्होंने पुनः कहा कि यह ब्रह्मचारी कौन है? उन्होंने कहा, ब्रह्मचारी ब्राह्मण है। ब्राह्मण कौन जो सत्य को ही दृष्टिपात करता रहता है जो ब्रह्मणेलोकाम् वाचस्सुतम् देवत्वाम्। वेद का वाक् कहता है ब्राह्मण वह है जो ब्रह्म को अपने में और अपने को ब्रह्म में जो दृष्टिपात करने वाला है, वह ब्राह्मण कहलाता है। मेरे प्यारे ! देखो ब्रह्मणं ब्रव्हे क्रतम देवाः जो सत में रत्त रहने वाला है। पुनः प्रश्न करता रहता है, क्या ब्रह्मचारी कौन है? उन्होंने कहा, ब्रह्मचारी वह जो एक-एक

श्वांस का मनका बना लेता है और मनका बना करके ब्रह्मसूत्र में पिरोता है वह ब्रह्मचारी कहलाता है। तो मेरे प्यारे ! देखो ऋषि ने नाना प्रकार के प्रश्नोत्तरों में सर्वत्र ब्रह्माण्ड को मापने का प्रयास किया।

भगवान् राम द्वारा विष्णु की विवेचना

विचार आता रहता है कि साधक अपने में साधना करता रहता है, परन्तु आज मैं बेटा ! दूरी न चला जाऊँ। मैं भगवान् राम की चर्चा कर रहा था कि मैं त्रेता के काल में जहाँ मुनिवरो ! देखो ब्रह्मचारी, ब्रह्मवर्चोसी और ब्रह्मवेत्ता। बेटा ! देखो तीन प्रकार की श्रेणी के मानो देखो प्राणियों की पंक्ति लग जाती है यज्ञशाला में। तो प्रातःकालीन बेटा! वह याग करते और याग के पश्चात् उनकी उपदेश मंजरी प्रारम्भ होती और उपदेश मंजरी क्या प्रारम्भ राम एक समय उन्होंने उपदेश प्रारम्भ किया क्या हमारे यहाँ राजा का नाम विष्णु है। जब विष्णु की याचना हो रही थी और विष्णु शब्द का प्रतिपादन हो रहा था, तो उन्होंने कहा कि राजा का नाम विष्णु है, और विष्णु के मानो देखो चार भुज कहलाते हैं। राम ने कहा कि जब विद्यालयों में अध्ययन करते थे तो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने मुझे देखो जब उन्होंने विष्णु शब्द की विवेचना की। तो विष्णु मानो देखो अन्तरिक्ष में गमन करने वाले तारामण्डलों का नाम भी विष्णु कहा जाता है, क्योंकि यह यौगिक शब्द है और राजा का नाम विष्णु है जो प्रकाश का द्युतक है। जितेन्द्रिय राजा होना चाहिए। उन्होंने कहा राजा वह विष्णु कहलाता है जिस राजा के भुज में—राजा के चार भुज होते हैं। विष्णु के चार भुज कहलाते हैं। बेटा ! चार भुजों में क्या—सबसे प्रथम भुज में पद्म होता है और द्वितीय भुज में गदा होती है और तृतीय में चक्र होता है, चतुर्थ में शंख होता है। तो मेरे प्यारे! देखो यह चार प्रकार के नियम राजा के राष्ट्र में होते हैं।

मानो देखो इसी प्रकार जैसे परमात्मा की चार प्रकार की सृष्टि कहलाती है। सबसे प्रथम स्थावर सृष्टि है और द्वितीय सृष्टि का नाम अंडज है और तृतीय का जंगम है और चतुर्थ का नाम मुनिवरो ! देखो वह उद्भिज कहा जाता है। यह चार प्रकार की सृष्टि प्रभु की है। वह

चार प्रकार के नियमों से इन प्राणियों की रक्षा करता है। उनमें उत्पत्ति के मूल में रहता है। इसी प्रकार, चार प्रकार के राजा के राष्ट्र में मानो देखो नियमावली होती है। इसलिए वह विष्णु का भुज कहलाता है। **भुज का अभिप्राय यह है कि नियम होने चाहिए।** सबसे प्रथम भुज में मुनिवरो ! देखो पद्म होता है जिस राजा के राष्ट्र में चरित्र होता है वह राष्ट्र ऊँचा होता है। पद्म कहते हैं बेटा ! देखो चरित्र को और देखो प्रतीक वही कहलाता है। अमृतम् ब्रह्मा लोकमतम् ब्रव्हे देवत्वाम् वेद का वाक् कहता है क्या राजा जब जितेन्द्रिय होता है तो उसके एक भुज में एक नियम में मानो चरित्र होता है और पद्म होता है। पदमं ब्रह्मा देखो कन्या एक छोर से राष्ट्र के द्वितीय छोर तक चली जाए उसको पुत्री और भोजई की दृष्टि से दृष्टिपात करने वाला समाज होना चाहिए। इस प्रकार का मुनिवरो ! देखो नियम एक प्रथम होना चाहिए। द्वितीय नियम मानो देखो गदा होनी चाहिए राजा के राष्ट्र में देखो गदाधर अमृतम् देवम् ब्रह्मा देखो वह क्षत्रिय ऊँचे होने चाहिए और जितेन्द्रिय हों और गदा होनी चाहिए। गदा नाम बेटा ! कहीं ज्ञान का प्रतीक माना है। क्या ज्ञान से समाज को ऊँचा बनाया जाए और यदि ज्ञान से भी वह अज्ञान में रहे तो उसको गदा से उसका प्रहार कर दिया जाए जिससे राष्ट्र में ज्ञानता हो जाए। राष्ट्र में ज्ञानता ही तात्पर्य ज्ञानम् ब्रहे उपदेश है। तो मेरे प्यारे ! देखो राजा के द्वितीय भुज में गदा होनी चाहिए और तृतीय भुज में शंख मानो चक्र होना चाहिए। चक्र कहते हैं बेटा। संस्कृति को, राजा के राष्ट्र में अपनी संस्कृति हो, अपना वैदिक विचार हो। अमूल्य ज्ञान से जितेन्द्रियता में इसमें ज्ञान और विज्ञान से सना हुआ विचार होना चाहिए। मेरे प्यारे ! देखो वह चक्र कहलाता है।

भगवान् राम का जीवन

मुझे स्मरण आता रहता है भगवान् राम का जीवन—मैंने इससे पूर्व काल में तुम्हें चर्चाएँ कीं। देखो भगवान् राम ने देखो—जब वह राष्ट्र में पालक बने तो मुनिवरो ! देखो उन्होंने रक्षा के लिए गदा को

अपनाया, चरित्र को अपनाया, जितेन्द्रिय बने और उसके पश्चात् चक्र को अपनाया। मेरे प्यारे देखो ! उन्होंने सबसे प्रथम निषाद को राजाम् ब्रहे क्रतम्, मानो निषाद को शोधन करके देखो भूमि का, अहिल्या का कल्याण किया। राम ने—बेटा ! जिस भूमि में चले गए वह भूमि बज्र के तुल्य थी, परन्तु निषाद के देखो वह कृषकों से कहा कि तुम इसमें अन्न उत्पन्न करो। इसका उद्धार हम करेंगे। विचारवेत्ता कहते हैं बेटा ! मुझे स्मरण है राम ने आगे देखो चक्र को ले करके विभीषण को राज दे करके लंका में कुरीतियों को उन्होंने नष्ट किया। पातालपुरी में उन्होंने अहिरावण को नष्ट करके ही मानो देखो मकरध्वज, देखो हनुमान के पुत्र को उन्होंने पातालपुरी का राज दिया। क्योंकि हनुमान जी अमृतम् देखो महाराजा सुग्रीव के यहाँ उनका संस्कार हुआ था। उनकी कन्या से उनका एक ही पुत्र हुआ, उसका निधन हो गया था। तो मेरे प्यारे ! देखो मकरध्वज हनुमान का पुत्र पातालपुरी में रहते थे। तो विचार आता है कि वह जो वृहीत नाम का राजा मेरे प्यारे देखो ! नरायन्तक को नष्ट करके वहाँ अपनी संस्कृति का प्रसार किया। तो विचारवेत्ताओं ने बेटा ! अपनी बहुत-सी अमृतम् ब्रह्मा साहित्य साक्षी है और इतिहास कहता है मुनिवरो ! देखो राम ने चक्र को मुनिवरो ! देखो सर्वत्र राष्ट्र में पृथ्वी का राज मानो नहीं चाहा, परन्तु उसमें संस्कृति का प्रसार हुआ। मेरे प्यारे ! देखो राम ने ब्रह्मणे व्रतम् अप्रतम् देवाम् ब्रव्हा उन्होंने कहा कि राष्ट्र में याग होने चाहिए। यज्ञोमयी विष्णु—राजा का नाम जहाँ विष्णु है वहाँ याग को विष्णु कहते हैं। परन्तु विष्णु नाम यहाँ देखो, उन्होंने कहा कि राजा के चतुर्थ नियम में मानो देखो वह गानम ब्रव्हे व्रतम देखो अमृतम अव्रीही व्रतम शंख होना चाहिए। वह जो शंख है, वह काहे का नाद करता? वेदमन्त्रों का नाद करता रहता है। मेरे प्यारे ! देखो वेदमन्त्र को जटा पाठ में गाता है, कहीं घन पाठ, कहीं उदात्त अनुदात्त में वेदमन्त्रों का ब्राह्मण पाठ करता रहता है। राजा के राष्ट्र में बेटा ! ब्राह्मण होने चाहिए। वेदज्ञ होने चाहिए जो वेद का उद्घोष करने वाले हों अपनी शंख ध्वनि को ले करके ही मुनिवरो ! राष्ट्र को ऊँचा बनाया जा सकता है। जब राजा के राष्ट्र में बुद्धिमान ब्राह्मण

जब उद्गीत माला पाठ में वेदमन्त्रों का उद्गीत गाता है तो मेरे प्यारे ! देखो राष्ट्र में एक महान ध्वनि होने लगती है। तो विचार आता रहता है, सम्भव ब्रह्मा लोकाम् वाचतम्। मेरे प्यारे ! देखो, विष्णु नाम राजा का है, राजा जो जितेन्द्रिय होता है तो यह चार प्रकार के नियम बनाता है अपने राष्ट्र में—सबसे प्रथम चरित्र और द्वितीय मानो देखो वह गदा शिक्षा का प्रतीक है और वह मानो देखो जो अराजकता है, उसका मृत्यु का प्रतीक भी माना गया है। मेरे प्यारे ! देखो ब्रह्मणं ब्रहे क्रतम चक्र का अभिप्रायः अपनी संस्कृति अपना मानवीय विचार है, जिससे राष्ट्र ऊँचा बनता है और मुनिवरो ! देखो शंख ध्वनि जिस राजा के राष्ट्र में ब्राह्मण होते हैं और ब्राह्मण भी वेदज्ञ हों, वेद का पठन-पाठन करने वाले हों और विवेकी हों, जिससे राष्ट्र मानो देखो बुद्धिमानों से ऊँचा बनता है। गृह भी जब बनता है तो बुद्धिमानों से गृह ऊँचा बनता है, मूर्खों से नहीं बना करता है। तो विचार आता रहता है कि राष्ट्र को राजानम् ब्रव्हे राष्ट्र में एक निर्वाचन पद्धति होनी चाहिए परन्तु देखो वह महानता की होनी चाहिए जिससे विवेकी पुरुषों में उसका नामोकरण होना चाहिए।

आओ मेरे प्यारे ! भगवान् राम जब प्रातःकालीन मानो अपनी यज्ञशाला में याग करते थे तो याग में मुनिवरो ! देखो ब्रह्मवेत्ता, ब्रह्मवर्चोसी, ब्रह्मचारी अपनी-अपनी पंक्तियों में विद्यमान हो करके अपना विचार देते। परन्तु राम ने यह अपने में घोषणा की क्या देखो अयोध्या राष्ट्र में याग होना चाहिए, जिससे अयोध्या ऊँची बने और अयोध्या में मानो देखो सार्थकम अमृतम देखो सुगन्ध हो जाए। देखो, **प्रजा में दो प्रकार की सुगन्धि होती है** एक विचारों की सुगन्धि होती है और एक साकल्य की सुगन्धि होती है। जो अग्नि में तुम देखो, अग्नि को देवताओं का मुख बना करके उसमें सुगन्ध चरू प्रदान करते हों और एक विचारों की सुगन्धि होती है, जहाँ मानव विद्यमान हो, वहाँ अपनी आत्मचर्चा करे। गृह की चर्चा हो, एक दूसरे में मानो समाहित होने की चर्चा होनी चाहिए जिससे समाज ऊँचा बने।

बेटा ! देखो, आज का विचार मैं विशेष नहीं दूँगा। केवल विचार विनिमय यह राम ने यह घोषणा की अपने राष्ट्र में, प्रातःकालीन यह घोषणा कर दी कि मेरे राष्ट्र में प्रत्येक गृह में याग होना चाहिए। ब्रह्मचारी याग करे, गृह आश्रम में याग हो क्योंकि ब्रह्मचारी याग से ऊँचा बनता है, पति-पत्नी याग से ऊँचे बनते हैं। और मुनिवरो ! देखो वानप्रस्थ विद्यालय यागों से ऊँचे बनते हैं। मुनिवरो ! देखो आध्यात्मिक विचार जब मुनिवरो ! भौतिकवाद से दोनों से सना हुआ होता है तो वही विचार मुनिवरो ! देखो मानव समाज को ऊँचा बनाते हैं। तो आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल विचार-विनिमय यह कि हम परमपिता परमात्मा को यज्ञोमयी स्वरूप कहा करते हैं क्योंकि वह परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं। अब मानो देखो मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द-उच्चारण करेंगे।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी महाराज के उद्‌गार

ओ३म् यश्शचमा भूतम् वर्णनं भविते नमाः।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल, भद्र समाज। अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे, क्योंकि यह गागर में सागर को भरण कर देते हैं। सूक्ष्म से विचारों में, सूक्ष्म से समय में अपने इतने अनन्तमयी विचार हमें दे देते हैं कि हम उसमें धन्य हो जाते हैं। तो आज देखो जहाँ यह हमारी वाणी जा रही है, आकाशवाणी जा रही है, वहाँ एक याग सम्पन्न हुआ है और मेरा अन्तरात्मा यजमान के साथ रहता है। हे यजमान तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और तेरे गृह में द्रव्य का सदैव सदुपयोग होता रहे। क्योंकि यह जो काल है, मैं इसे वाममार्ग का काल कहता रहता हूँ। पूज्यपाद गुरुदेव तो बहुत ऊँची कल्पना करते रहते हैं। मैं इस आधुनिक काल के सम्बन्ध में निम्न कल्पना करता रहता हूँ और वह कल्पना यह कि आज का मानव समाज सुरा और सुन्दरी द्रव्य की लोलुपता में लगा हुआ है। यह द्रव्य की लोलुपता में और देखो सुरापान में लगा हुआ है। अपने द्रव्य का दुरुपयोग कर रहा है कि एक समय आता है कि

द्रव्य इसको त्याग देता है। विचार आता रहता है, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहता रहता हूँ कि आधुनिक काल में वर्तमान में राजा भी वाममार्गी है और प्रजा भी वाममार्गी है। वाममार्ग उसे कहते हैं जो उल्टे मार्ग पर गमन करता हो।

धर्म की विवेचना

आज का राजा कहता है कि हम धर्म निरपेक्ष हैं। परन्तु अरे ! राजा यदि तेरे यहाँ धर्म नहीं रहा तो राज्य ही क्या है। मानो जब मैं यह कहता हूँ क्या धर्मज्ञ ब्रह्मा देखो धर्म क्या इन्होंने यथार्थ स्वीकार किया। कहीं मोहम्मद के मानने वालों को धर्म स्वीकार कर लिया, कहीं ईसा के मानने वालों को धर्म कहते हैं। कहीं और भी नानक के मानने वालों को धर्म कहते हैं। अरे ! धर्म यह नहीं है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कहते हैं कि **धर्म एक वचन है,** बहुवचन नहीं है, क्योंकि वचन एकम् ब्रह्मा धर्म एक है और रूढ़ि अनेक कही जाती हैं। रूढ़ियों को धर्म नहीं कहा जा सकता। ये रूढ़ि कहलाती हैं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी यौगिक शब्द की रचना में कितना अपना मन्तव्य दिया है। एक विष्णु देखो यौगिक शब्द है **जहाँ पालना का मूल है, वही विष्णु है।** इसी प्रकार देखो **जहाँ मानव की इन्द्रियाँ सुक्रियाकलाप करती हैं उसी का नाम धर्म है।** पूज्यपाद गुरुदेव से बहुत समय हुआ जब देखो हम अध्ययन करते थे तो एक समय यह प्रश्न आया कि **धर्म क्या है।** तो नेत्रों में उन्होंने कहा, देखो नेत्रों से सुदृष्टिपात करना धर्म है, नासिका से सुगन्ध लेना उसका धर्म है, देखो वाणी से यथार्थ उच्चारण करना उसका धर्म है, श्रोत्रों से यथार्थ और देखो, धर्म चर्चा परमात्मा की चर्चा श्रवण करना धर्म है और देखो धर्म कहाँ है, **धर्म मानव की इन्द्रियों में समाहित रहता है।** देखो आधुनिक काल में धर्म कहाँ स्वीकार कर लिया, धर्म देखो रूढ़ियों के जो देवालय हैं, उनमें धर्म नहीं होता, उनमें तो रूढ़ियाँ व्याप्त रहती हैं। अरे ! रूढ़ियों को त्यागने का प्रयास करो।

हे राजन् जब तक तेरे राष्ट्र में रूढ़ि रहेंगी, जब तक तेरा राष्ट्र पनपेगा नहीं, हिंसा समाप्त नहीं होगी। हिंसा को यदि नष्ट करना है,

नरसंहार को समाप्त करना है तो रूढ़ियों को त्यागना होगा, रूढ़ियों के ऊपर राजा को बल देना चाहिए। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहता रहता हूँ, क्या प्रत्येक रूढ़ियों के आचार्यों की एक सभा होनी चाहिए और राजा की मध्यस्थता में उस सभा में निर्णायक होने चाहिए। और एक दूसरे का विचार-विनिमय हो जो धर्म और विज्ञान पर जो विचार स्थिर हो जाए उसी का नाम धर्म कहा जाता है। परन्तु देखो जब राजा अपना निर्णायक हो, धर्म को अपनाये और देखो रूढ़ियों को त्यागने का प्रयास करे।

मैं बड़ा शोकातुर हो जाता हूँ जब राजा आधुनिक काल में राजा यह कहता है है कि हम सब धर्मों को मानते हैं। अरे भोले प्राणी तूने अध्ययन तो किया है परन्तु तू स्वार्थ में आ गया है। क्यों स्वार्थ क्योंकि तुमको स्वार्थ यह है क्या तुझे अपने पद की लोलुपता में देखो रूढ़ियों को धर्म कह रहा है। अरे ! रूढ़ियाँ तो रूढ़ियाँ हैं, धर्म नाना नहीं होते, धर्म एक होता है, रूढ़ियाँ अनेक कही जाती हैं। परन्तु देखो मुझे यह आश्चर्य होता रहता है। मैं विशेष चर्चा तो प्रगट नहीं करूँगा, पूज्यपाद गुरुदेव को मैं यह अपना वाक् प्रकट करता रहता हूँ। मेरे हृदय में विडम्बना रहती है। प्रत्येक मानव मानव को नष्ट करना चाहता है इसके मूल में देखो राजा की धृष्टता है, राजा का अयोग्य होना है। राजा जब अयोग्य होता है, मूर्खों का राजा चुना हुआ, निर्वाचन किया हुआ मूर्ख हुआ करता है और बुद्धिमान का देखो निर्वाचन किया हुआ विवेकी राजा होता है, वह राष्ट्र को ऊँचा बनाता है। परन्तु जब अपठित समाज राजा को निर्वाचित करती है, तो राजा देखो अपठितता में मूर्खाम ब्रव्हे व्रतम पामरो की प्रकृति में मानो रत्त हो जाता है। उसको स्वार्थ के स्थान में कोई द्वितीय वस्तु उसे नहीं समाहित होती। तो इसलिए स्वार्थ ही पामरों का राज्य कहलाता है, पामरों की प्रतिभा कहलाती है।

आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह कि राजा की मध्यस्थता में धर्म को अपनाना चाहिए। धर्म मानव की इन्द्रियों में समाहित रहता है। मानो धर्म किसी भी रूढ़ि में हो वही धर्म कहलाता है। मानव का—देखो किसी भी रूढ़ि का मानव नेत्रों से सुदृष्टिपान करेगा

तो वही उसका धर्म है। मानव, देखो धर्म को अपनाओ और अधर्म और रूढ़ियों को नष्ट करने का प्रयास करो।

यजमान को आशीर्वाद

यह आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा और जहाँ यह याग हुआ मैं अपने यजमान को, हे यजमान ऐसे काल में तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग हो रहा है और देवाम् पूजाम ब्रह्मे पूज्यपाद गुरुदेव ने तो गागर में सागर भरा ही है, परन्तु देखो यह तेरे गृह में सदैव द्रव्य का सदुपयोग होता रहे और देखो शुभ कार्यों में तेरे द्रव्य की लोलुपता बनी रहे, ऐसा मानो देखो मेरा विचार रहता है। तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे ऐसी मेरी कामना इसके साथ मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से अवकाश पाऊँगा।

पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे ऋषिवर अभी-अभी मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने दो शब्द उच्चारण किए। इनके विचारों में कितनी विडम्बना है राष्ट्र के प्रति, कितनी विडम्बना लगी हुई है। समय आयेगा जब यह विडम्बना पूर्ण हो सकेगी। अभी तो ब्रव्हे क्रतम देवत्वाम् देखो यह रूढ़ियों को नष्ट करना, इन्होंने बहुत सुन्दर वाक् कहा है क्या रूढ़ियाँ अनेक हैं, धर्म एक है। **धर्म बहुवचन नहीं एकोकी वचन है।** धर्म एक वचन है, रूढ़ि बहुवचन कहलाती हैं। तो बहुवचन को त्याग करके एक ही वचनों में पालन करना चाहिए। यह आज का विचार अब सम्पन्न होने जा रहा है, समय मिलेगा शेष चर्चाएँ कल प्रकट करेंगे। आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन।

ओ३म् देवाः यम सर्वम

ममंरथाः वाचन्नमाः गृहणनामत्वाः।

दिनाँक : 4 अगस्त, 1992

समय : दोपहर 11 बजे

स्थान : ग्राम दान्दूपुर, मेरठ

।। ओ३म् ।।

प्राण का महत्त्व

(I)

जीते रहो!

देखो मुनिवरो ! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परा से ही वेदों की जो पठन-पाठन की पद्धति है, उसके भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वरूप माने गये हैं। क्योंकि वेदों का पठन-पाठन भी दस प्रकार से किया जाता है जैसे जटा पाठ, धन-पाठ, माला-पाठ, संहिता पाठ, उदात्त और अनुदात्त आदि। और भी उच्चारण करने के नाना प्रकार के भेदन हैं। आज मैं इन भेदनों में नहीं जाना चाहता हूँ। क्योंकि वेदों का प्रत्येक मन्त्र एक मनके के रूप में होता है। क्योंकि नाना प्रकार के मनके एक सूत्र में पिरोने से माला बन जाती है। इसी प्रकार प्रत्येक वेद का मन्त्र मनका बन करके बेटा ! एक ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोया हुआ है। इसीलिए प्रत्येक यौगिक, वेद के उच्चारण करने वाला प्रायः वेदों की ध्वनि करता है। वह इनकी ध्वनि क्यों कर रहा है क्योंकि सर्वत्र ब्रह्माण्ड ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोया हुआ है, और प्रत्येक वेदमन्त्र अध्यात्मिकवाद और भौतिकवाद का वर्णन कर रहा है। अध्यात्मिकवाद और जितना भी इसमें ज्ञान है और जितना विज्ञान है वे इस सर्वत्र एक-एक कण जितना भी इस पृथ्वी पर है वह इस कण-कण में व्यापने वाला ओ३म्-रूपी सूत्र है।

ओ३म रूपी सूत्र

इसीलिए मेरे पुत्रो ! प्रत्येक वेदमन्त्रः उस ओम्-रूपी धागे में पिरोया हुआ है और उसकी एक माला बन जाती है। ओम्-रूपी सूत्र

के द्वारा मनके-रूपी वेद की ऋचा, बेटा ! जो इस प्रकार की माला को कण्ठ में धारण कर लेता है वह मृत्यु को विजय कर लेता है। क्योंकि उसके सर्वांग में प्रकाश होने लगता है। वह ज्ञान और विज्ञान में रमण करने लगता है। तो हमारे ऋषि-मुनियों ने बहुत अनुसन्धान किया। और अनुसन्धान करके उन्होंने कहा है कि हमें अपने कण्ठ में माला को धारण करना चाहिए। परन्तु वह माला ओम्-रूपी सूत्र में पिरोई होनी चाहिए क्योंकि ओम् रूपी सूत्र नहीं रहेगा तो हमारा कण्ठ यह सजातीय नहीं होगा। इसमें महत्ता नहीं आ पाएगी।

ज्ञान और विज्ञान

मेरे पुत्रो ! आओ ! आज हम उस महामना देव की महिमा का गुणगान गाते चले जा रहे हैं। उस मेरे प्यारे प्रभु ने बेटा ! यह वेदों का ज्ञान प्रत्येक आभा को पिरोया हुआ प्राणी मात्र को प्रदान किया है। क्योंकि ज्ञान और विज्ञान की दृष्टि से ही उसे प्रायः दृष्टिपात किया जाता है।

आओ ! मेरे पुत्रो ! आज तुम्हें मैं बिखरे हुए मनकों के वाक्य प्रकट कराने नहीं आया हूँ। आज मैं तुम्हें उन ऋषियों के आसन पर ले जाना चाहता हूँ जहाँ बेटा ! ऋषि-मुनि विद्यमान हो करके एक दूसरों की सम्मति, एक दूसरे की सुगठितता, अपनी उस विचार धारा में उड़ान उड़ते थे वह उड़ान कितनी विचित्र और कितनी दार्शनिकता में परणित होती रही है। क्योंकि ज्ञान और विज्ञान तो मानव का यौगिक गुण है। कोई भी मानव इस संसार में जब आता है, तो उसके दो ही क्रियाकलाप होते हैं। जिससे वह ज्ञान और विज्ञान दोनों प्रकार से वह इस संसार को जानने की इच्छा करता है। अपना कोई भी कर्म करता है उस कर्म को करके उसको वह दृष्टिपात करता है। मेरे पुत्रो ! आज मैं तुम्हें विशेषता में नहीं ले जाऊँगा।

सूत्र और मनके

केवल वाक्य ये प्रकट करने के लिए कि हमारे जीवन के जितने

भी देवता (विषय) हमारे जीवन की जितनी भी आभायें हैं वे उस मेरे प्यारे प्रभु से सुगठित हैं। वह जो चैतन्य देव है, उसकी प्रतिभा प्रत्येक कण-कण में ओत-प्रोत हो रही है। प्रत्येक इन्द्रिय उसी के आश्रित हो करके अपना कार्य कर रही है। मेरे पुत्रो ! देखो ! उसमें हमें संलग्न होना है, उसमें लग्नता से हम विचारधारा को अपनी गम्भीरता से और अपने को दृष्टिपात करेंगे, तो बेटा ! उसमें हम भी एक सूत्र के मनके होंगे। हम भी बेटा ! सूत्र के मनके हैं। इस सूत्र में पिरोये हुए हैं। मेरे पुत्रो ! इस सूत्र और मनके दोनों को हमें जानना है।

महर्षि मार्कण्डेय ऋषि महाराज का चिन्तन

आओ ! मेरे पुत्रो ! आज मैं तुम्हें उस महा ऋषि, मनीषि के द्वार पर ले जाना चाहता हूँ जहाँ महामना प्रभु की महिमा का गुणगान गाया जाता है। जहाँ देव के ज्ञान और विज्ञान की प्रायः चर्चाएँ की जाती हैं। मेरे प्यारे ! देखो ! कौन? महर्षि मार्कण्डेय ऋषि महाराज। मैं उनकी चर्चाएँ कर रहा हूँ। उनका ज्ञान और विज्ञान दोनों नितान्तता (पूर्णता) में रहे हैं। दोनों के ऊपर अनुसन्धान होता था। परन्तु ऋषि यह विचारता है। ऋषि केवल विज्ञान को जान करके भी यह भी विचारता है कि यह भी प्रभु का एक ज्ञान है और ज्ञान और यौगिकता में प्रवेश होने के पश्चात् भी यह विचारता है, यह भी प्रभु की ही प्रतिभा है। और मैं भी प्रभु की प्रतिभा हूँ। **अपने को वह प्रभु में दृष्टिपात कर रहा है और प्रभु को अपने में दृष्टिपात कर रहा है।**

मुनिवरो ! देखो जिसमें निराभिमानता, निर्भीकता थी ऋषि यह कहता है कि प्रभु का राष्ट्र जैसे अनन्त उसकी प्रतिभा है अथवा उसकी रचना है इसी प्रकार वह अनन्त है। वह भी अनन्त है और उसकी महिमा भी अनन्तवत् मानी गयी है। मेरे पुत्रो ! जब हम उसके मनके हैं तो हमें अभिमान किसका होगा? यह कहाँ से अभिमान व्याप गया है? यह अन्धकार रूपी अज्ञान कहाँ से आ गया है जिससे हम अपने को प्रभु से दूर स्वीकार कर रहे हैं? मेरे पुत्रो ! देखो ! यह अज्ञान कहाँ से आया है? इसी का चिन्तन न करना। यह इसका **चिन्तन करना, मनन करना यह हमारा कर्त्तव्य है।**

आओ ! मेरे पुत्रो ! देखो ! वैशम्पायन ऋषि और आदि ऋषि बेटा ! उनके आसन पर आते रहते थे। त्रीतकेतु ऋषि महाराज, गोग्रीवांछन ऋषि महाराज हरितत्त गोत्रीय उनके द्वार पर आते रहे। और नित्य-प्रति बेटा ! विचार विनिमय होता रहा। विचार विनिमय यह हो रहा था कि हम योगी कैसे बनें? हम अध्यात्मिक वैज्ञानिक कैसे बनेंगे? **हमारा आध्यात्मिक विज्ञान क्या है?** बेटा ! योग; योग इस चेतना के तन्तु-पर्व में जो वस्तु है उसको जानना और जान करके उसमें समावेश करने का नाम मेरे पुत्रो ! यह आध्यात्मिक विज्ञान है।

भौतिक विज्ञान क्या है? भौतिक विज्ञान; एक परमाणु, द्वयणक, चतसेण, पंचम परमाणु, त्रसदेण, त्रसरेणु और पंचम त्रसरेणु, इनको जानते रहना और आगे को हमारी गति रहना। वह गति होते-होते हम यन्त्रों में उनको एकत्रित करके, उनके यन्त्रों को, हम उनसे यन्त्रों का निर्माण करते हुए और इन यन्त्रों को हम राष्ट्र को अर्पित कर देते हैं। मेरे प्यारे ! राष्ट्र को भी अर्पित न करो तो अपने द्वारा एकत्रित करते रहो उनसे नाना प्रकार के चित्र क्रियात्मक; जो ब्रह्माण्ड में गति हो रही है उसको जानना। यह सर्वत्र भौतिकवाद कहलाता है। यह सब भौतिकवाद है। एक दूसरे के लिए या यन्त्रों का निर्माण करना और मृत्यु के लिए, समाप्ति के लिए।

परन्तु देखो ! वही जो उसका यन्त्र है वह उसको अपने में समावेश कर लेता है वह जो आग्नेयास्त्र बना है वरूणास्त्र ऐसा निर्मित किया है वैज्ञानिकों ने कि वह अग्नि, अग्नि वाला यन्त्र वह वरूणास्त्र में समाहित हो जाता है। तो जहाँ केवल मृत्यु ही मृत्यु थी वहाँ द्वितीय आभा में जीवन भी आ गया परन्तु देखो ! इस प्रकार विज्ञान को जानना; इस प्रकार आभा में परणित होने का नाम भौतिकवाद कहलाता है।

मुनिवरो ! देखो ! भौतिक विज्ञान के मार्ग से होते हुए, इस **भौतिक विज्ञान को जानते हुए, आध्यात्मिक मार्ग में प्रवेश होने का नाम बेटा ! यौगिकता मानी जाती है।** उसको हम यौगिकता कहते

हैं, क्योंकि इस यौगिकवाद के मार्ग से हो करके ही मानव जब आध्यात्मिकवाद में प्रवेश करता है तो वहीं से वह मृत्यु को विजय करता है। मेरे प्यारे ! इस भौतिकवाद में मृत्यु को विजय नहीं कर सकता है। परन्तु जब इसके मार्ग से होते हुए, इसको जानते हुए और आध्यात्मिकवाद में प्रवेश करता है तो वहाँ एक केवल मृत्यु रह जाती है जिसको हमें विजय करना है।

मेरे पुत्रो ! **कौन सी मृत्यु?** जो इन्द्रियों को पाप से छेदन कर देती है। मेरे पुत्रो ! जैसे मैंने वाणी, ध्राण और चक्षु की चर्चाएँ कीं। ये तीनों को पाप से असुरों ने छेदन कर दीं। परन्तु जब, प्राण-रूपी जीवन उन्हें प्राप्त हुआ सूत्र में पिरोई गई, तो उन्हें बेटा ! कोई असुर पाप से छेदन नहीं कर सका। पाप से जब तक छेदन होती है जब तक ये केवल्य (एकांकी) रहती हैं। और जब इन्हें किसी का सन्निधान-मात्र प्राप्त होता है, तो असुर इसको छेदन नहीं कर सकते ! बेटा ! चेतना का, प्राणत्व का, जब प्राण-देवता का इन्हें सम्पर्क प्राप्त हो गया तो उसे असुर छेदन नहीं कर सकते।

बेटा ! योग में जाने वाला ऋषि इन इन्द्रियों के दोनों प्रकार के स्वरूपों को जानता है। दोनों प्रकार के स्वरूपों को जान करके अग्रणीय बन जाता है। बेटा! मुझे स्मरण है, जब वेद का ऋषि यह विचारने लगा कि यह जो श्रोत्र-इन्द्रियाँ हैं। जैसे चक्षु बाह्य जगत् में आदित्य बन गया। इस मानव पिण्ड में वह चक्षु बना हुआ है। ब्रह्माण्ड और पिण्ड दोनों की एकता आ गई। एकता के सूत्र में ये पिरोये गये। मेरे पुत्रो ! जब अदिति बन गया जो अदिति मेरे प्यारे ! जो संसार, नाना प्रकार के जिसमें लोक में इसका प्रकाश जाता है, वही निर्माण होता है। क्योंकि प्रकाश से ही तो निर्माण होता है। इसीलिए देखो आदित्य बन गया। बाह्य जगत् में वह आदित्य है और सूर्य है। मेरे प्यारे ! आन्तरिक-जगत् में वह ही नेत्र बन करके इस मानव को पथ-दर्शन कराता है। मानो पथ-दर्शन, पथ का दर्शन करने लगता है। यह कौन करा रहे हैं? ये चक्षु करा रहे हैं।

श्रोत्र-दिशाएँ

इसी प्रकार हमारे यहाँ श्रोत्र आ जाते हैं। श्रोत्र ये क्या हैं? मुनिवरो ! जिसे हम श्रवणेन्द्रियाँ कहते हैं। वे श्रोत्र ही हैं जिसे कर्ण कहते हैं। इसमें शब्द ओत-प्रोत हो गया—ये शब्द उच्चारण कर रहा था उच्चारण करते हुए जो इसमें स्वार्थपरता आई, तो दैत्यों ने इसे छेदन कर दिया। यह कैवल्य-मय था। जब प्राण देवता ने यह विचारा यह तो दुखित हो रहा है, पापाचार में है, दुष्वाक्य श्रवण करता रहता है, शुद्ध भी श्रवण करता रहता है, परन्त शुद्ध शब्द को यह त्याग देता है और अशुद्धता, पापाचार शब्दों को यह ग्रहण करके आवागमन के संस्कारों को यह चित्त में विद्यमान कर रहा है।

मेरे प्यारे ! जब प्राण-देवता ने यह दृष्टिपात किया तो इसे अपने द्वारा आमन्त्रित करके कहा हे कर्ण ! जहाँ दर्शनों की विवेचना श्रवण करते हो बुद्धिमानों के द्वारा वहाँ तुम पामरों के द्वारा अशुद्ध शब्दों को भी ग्रहण करते हो और उसमें तुम तन्मय हो जाते हो। जिस बुद्धिमान की तुमने वार्ता श्रवण की है, जिस प्राण को, जिस देवता की चर्चा प्राप्त की है उसे तो तुमने समापन कर दिया है और जो पामर व्यक्तियों को वार्ता श्रवण की उसमें तन्मय हो गया है। आवागमन के संस्कारों को जन्म देने लगे। मृत्यु के मुखारबिन्दु में चले गये हो, मृत्यु तुम्हें निगल जायेगी।

मेरे पुत्रो ! जब श्रोत्रों से यह ऐसा कहा गया तो श्रोत्र प्राण के समीप आ गये। प्राण के समीप आ करके, देवता प्राण ने इसे अपने में परणित कर लिया। और मुनिवरो ! देखो ! यही तो इसके व्यापक स्वरूप की जानकारी है। ऋषियों की जानकारी हुई। और क्या जानकारी हुई? मुनिवरो ! देखो ! यही जो श्रोत्र, श्रोत्रेन्द्रियाँ हमारे इस पिण्ड में बन करके श्रोत्र श्रवण करता है। **वही शब्द मेरे प्यारे ! इसकी वही दिशाएँ बन गईं।** बेटा ! वही दिशाएँ बन गईं—प्राची दिग्, दक्षिणी दिग्, प्रचीती दिक् और उदीची दिक्, ध्रुवा और ऊर्ध्वा। **ये छह दिशाएँ बन गईं,** इनका निर्माण हो गया।

मेरे पुत्रो ! इन कर्णेन्द्रियों ने, इन श्रवणेन्द्रियों ने, इनका व्यापक स्वरूप बन करके बेटा ! जहाँ ये केवल श्रवण ही करते थे। अब ये विचारने लगा ऋषि कि यह शब्द कहाँ से आता है? इस शब्द की उद्‌बुद्धता कहाँ से होती है? जो श्रोत्रों में पहुँचा है इसका सम्बन्ध कहाँ से है? तो बेटा ! देखो ! ये दिशाएँ प्राप्त हो गईं। दिशाएँ क्यों प्राप्त हुई हैं? जब ये पिण्ड में बन करके रहीं; पिण्ड ही जानते रहे इस मानव शरीर को। तब तक मेरे प्यारे! ये श्रोत्रेन्द्रियाँ बनी रहीं। और जब ये ही ब्रह्माण्ड में परणित होने लगीं, ब्रह्माण्ड के आंगन को दृष्टिपात करने लगीं,—तो मेरे पुत्रो ! ये ही दिशाएँ बन गईं।

प्रकृति की गतियाँ

कैसी अमूल्य दिशाएँ बनीं? बेटा ! यहाँ हम ध्रुवा और ऊर्ध्वा को जानते हैं। हम प्रकृति की प्रत्येक गतियों को जानने लगे कि इस प्रकृति में कितनी गति है? बेटा ! (1) ध्रुवा है, (2) ऊर्ध्वा है (3) प्रसारण है, और मेरे प्यारे ! (4) गति (गमन) है और मुनिवरो ! देखो ! (5) आकुँचन है। ये पाँचों प्रकार की गति कहाँ से उसे प्राप्त हो गईं? प्रकृति से ही। दिशाओं को जान करके ही प्राप्त हो गईं। और **जितना भी भौतिक विज्ञान है मेरे पुत्रो ! इन पाँचों गतियों में निहित रहता है।**

मेरे प्यारे ! एक समय **महर्षि कणाद** अपने आसन पर विद्यमान थे। अपने आसन पर रह करके मौन थे। शान्त मुद्रा में विद्यमान थे। श्वेतकेतु, ब्रह्मचारी कवन्धि, (श्रुवाचक) पनपेतु मुनि की कन्या शवरी। कुछ और ऋषिवर, ब्रह्मचारी महर्षि कणाद ऋषि के द्वार पर पहुँचे। कणाद मुनि से कहते हैं, कणाद ऋषि ने इससे पूर्व मौन कर लिया था, वे मौन थे। मेरे पुत्रो! देखो उन्होंने जाकर यह प्रश्न किया, ब्रह्मचारी कवन्धि ने, कि महाराज **प्रकृति की कितनी गतियाँ हैं?** तो उस समय ऋषि ने अपने भुजों के बीच कृतियों से उन्हें निर्णित करा दिया। मेरे प्यारे ! (1) प्रसारण, (2) गति, (3) ध्रुवा और (4) ऊर्ध्वा और (5) आकुँचन; मेरे प्यारे! ये प्रकृति की पाँच गतियाँ हैं।*

*__टिप्पणी :-__ कर्म के भेदः-उत्क्षेपणमवक्षेपणमाकुञ्चन प्रसारणं गमनमिति-कर्माणि।। वैशेषिक दर्शन, महर्षि कणाद। वै.अ. (1 सू. 7।।)

'धनं धनं कृतिः देवाः'। उन्होंने कहा ये तीन गतियाँ तो जन्म में कहलाती हैं। और दो गतियाँ ऊर्वत्त कहलाती हैं। मेरे प्यारे ! ये प्रकृति की पाँच गति ऋषि ने ब्रह्मचारियों को वर्णित करा दीं। और ब्रह्मचारी ये जान गए; जितना भी मुनिवरो! भौतिक विज्ञान वैज्ञानिकों के मस्तिष्कों में रमण करता रहता है—ये पाँचों गतियों में गति करता रहता है, नृत्य करता रहता है।

विचार-विनिमय क्या है? मुनिवरो देखो ! ऊर्ध्वा में, ऊर्ध्वा में, ध्रुवा में—आकुँचन और प्रसारण गति इत्यादि से सब गतियाँ मानी गयी हैं। प्रसारण उसे कहते हैं जो इसको फैलाव कहते हैं। हमारे यहाँ वैदिक शब्द आता है 'स्त्री'। स्त्री का अभिप्रायः है जो प्रसारण करने वाली हो। प्रसारण एक से बहुधा की गति आती है। अनेकता में दृष्टिपात आने लगता है उसे हम गति, उसे हम प्रसारण कहते हैं। गति तो थी जो प्राणत्व कृतियों में जो गति करता है। ऊर्ध्वा, गुरुत्व, लघुत्व जो रमण करता है वह ऊर्ध्वा, ध्रुवा में रहता है। इनको सबको समेट करके आकुँचन-प्रवृत्ति बन जाती है उसको आकुँचन कहते हैं।

मेरे पुत्रो ! बहुत से महापुरुष हमारे यहाँ ऐसे हैं; जिन्होंने आकुँचन-शक्ति के ऊपर बहुत अनुसन्धान किया। जैसे महाराजा हनुमान थे। हनुमान जी जब आकुँचन-शक्ति के ऊपर अध्ययन करते थे। उनकी आकुँचन शक्ति बेटा ! उनकी बलवती बन गई थी। मुझे स्मरण आता रहता है, त्रेता के काल में जब महाराजा हनुमान आकुँचन-शक्ति के ऊपर अनुसन्धान करते थे। अपने शरीर को विशाल बनाना और सूक्ष्म बनाना। ये गतियाँ योगाभ्यास के द्वारा आती हैं।

मेरे प्यारे ! देखो ! योगीजन जब अनुसन्धान करते हैं, और योगेश्वर बनते हैं, तो आकुँचन इसमें प्रवेशता आ जाती हैं; आकुँचन-पना आ जाता है। यहाँ तक योगी सूक्ष्म बन सकता है—ऊर्ध्वा-मुख में उसके मुख में अर्पित भी कर सकता है। इतना सूक्ष्म बन सकता है। इतना विशाल भी बन सकता है। परन्तु मैं इस भयँकर वन में पुत्रो ! जाना नहीं चाहता हूँ। यह तो भयँकर वन है।

आज मैं इस वन के लिए नहीं आया हूँ। विचार देने तुम्हें इसीलिए आया हूँ कि इसका व्यापक विचार बन गया। ये जब दिशाएँ बन गईं। इस मानव का शरीर दिशायें; मानव के क्षेत्र दिशायें बन गए। तो इससे प्रकृति को गतियों को प्रतीति होने लगी। ऋषियों को इन गतियों की प्रतीति होने लगी कि इस प्रकृति में कितनी गति है।

मेरे प्यारे ! 'ध्रुवाः अग्रताम् देवाः'। यह प्राची दिग्, उदीची दिक्। ये प्रतीत भी होने लगता है कि प्राची से प्रकाश आता है और दक्षिण विद्युत का भण्डार है; और प्रतीची दिक् में अन्न का भण्डार है और उदीची से विद्युत और ज्ञान का प्रकाश आता है, और ध्रुवा में 'आसनम् सिद्धम' होता है ऋषि का आसन सिद्ध ध्रुवा से होता है। और **प्राण को गति जब ऊर्ध्वा में होती है तो उस समय ऊर्ध्वा गति से बेटा ! ऋषि उड़ान उड़ने लगता है।**

मेरे पुत्रो ! इन दिशाओं का ऋषियों में ज्ञान उस काल में हुआ जबकि उनका जीवन इस पिण्ड से बाह्य-ब्रह्माण्ड में जब वह गति करने लगा है। पिण्ड को उसने पिण्ड ही स्वीकार कर छवि का स्वीकार कर लिया, और बाह्य-जगत् में अपने को-व्यापकवाद में ले गया तो मुनिवरो! देखो उसे ये ब्रह्माण्ड, पिण्ड और ब्रह्माण्ड की दोनों को एक सूत्र में पिरोने की क्षमता उसके द्वारा आ गई।

ऋषियों ने, अनुसन्धान-वेत्ताओं ने **जिन्होंने आध्यात्मिक-विज्ञान का अनुसन्धान किया, उन्होंने केवल एक चक्षु, श्रोत्रों से ही इस संसार को जानने की इच्छा की है।** इसकी जानकारी हो गई, इसका अनुभव हो गया कि **सारा ब्रह्माण्ड तो दिशाओं के ऊपर विद्यमान है।**

जीवन मुक्त आत्माओं का आह्वान

एक मानव शब्द को उच्चारण करता है वह शब्द गति करता जिसका पर्यायवाची शब्द है उसी के द्वार पर जाता है। ऋषियों ने यहाँ तक भी अनुसन्धान किया कि यह शब्द; हम अन्तरिक्ष में हमारा शब्द

व्याप्य बन जाता है। यह शब्द अब हम उच्चारण कर रहे हैं दूरी तक जाता है इसको हम तन्तुओं पर विद्यमान करके यह शब्द, ब्रह्माण्ड में व्यापक बन जाता है। व्यापक बन जाता है जिस लोक के द्वारा। यहाँ तक मुनिवरो ! देखो, ऋषि-मुनियों को 'जीवन-मुक्त-आत्माओं' का बेटा! आह्वान (आह्वान) करते रहे हैं समय-समय पर।

विचार-विनिमय बेटा ! क्या? मैं तुम्हें एक अलौकिक चर्चा प्रगट कर रहा हूँ और उसमें अलौकिकता क्या है? मेरे पुत्रो ! देखो ! ऋषिजन जो अनुसन्धानवेत्ता हैं, आत्म-वैज्ञानिक हैं उनके समीप जो 'जीवन मुक्त-आत्मायें' अन्तरिक्ष में गति करती रहती हैं वे भी मेरे पुत्रो ! देखो ! **आह्वान-मन्त्र इस प्रकार के हैं, जिनसे मन्त्रणा की जाती है; मेरे पुत्रो ! देखो ! वे भी उनके समीप आ जाते हैं।**

आओ ! मेरे पुत्रो ! मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने के लिए नहीं आया हूँ। विचारना केवल यह है कि हमारी जो श्रोत्र-इन्द्रियाँ हैं उनके ऊपर हमारा कितना आधिपत्य होना चाहिए। मेरे प्यारे ! ये जो दिशायें हैं प्रत्येक शब्द जो आ रहा है प्रत्येक शब्द व्यापक बन करके प्राण के द्वारा गति कर रहा है। प्राण की ध्वनि रचनाओं में ओत-प्रोत हो करके 'उत्तराणाम् बृहिः कृतिः'। उस ध्वनि को हम श्रवण करने लगते हैं। यहाँ तक हम बेटा ! देखो, जो भी ध्वनि जो प्राण की शक्ति को जानता है वह प्राण के द्वारा ही बेटा ! प्रत्येक प्राणी नृत्य कर रहा है। प्रत्येक अपनी-अपनी भाषा में अपना भाष्य कर रहा है।

श्रोत्रों का प्राण से मिलान

तो मेरे प्यारे ! ऋषिजन तो, जो योगी होते हैं, इस श्रोत्र को प्राण से जो सम्बन्ध कर लेते हैं। तो इन दिशाओं में, जिनका, जिसका पर्यायवाची शब्द उसी वाची शब्द को जान जाते हैं। सर्प की भाषा को भी योगी जानता है। वह सिंहराज की भाषा को भी जानता है। जो क्रीड़ा करने वाला प्राणी है, उसकी गति जो प्राण से ध्वनि हो रही है, प्राण को जानने वाला इन गतियों को जानता है।

आओ ! मेरे प्यारे ! मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट कराने नहीं आया हूँ। केवल परिचय देने के लिए आया हूँ। आओ ! मैं तुम्हें बेटा ! एक ऋषि की चर्चा प्रगट करने आया हूँ। एक समय तुम्हें प्रतीत होगा, तुमने श्रवण भी किया होगा। **एक समय महर्षि भृगु मुनि महाराज प्राणायाम् कर रहे थे** और प्राण का सन्निधान केवल श्रोत्रों से अपना मिलान मिला रहे थे। इसके ऊपर उन्हें लगभग 101 (एक सौ एक) वर्ष हो गये, तपस्या करते हुए। एक सौ एक वर्ष जब बेटा ! तपस्या करते हुए, तो जिस आसन पर विद्यमान थे वे इतना प्राणों में तन्मय हो गए कि उन्हें एक महत्ता ही महत्ता दृष्टिपात आने लगी, उन्हें तपस्या करने के पश्चात्।

एक समय वे इस श्रोत्र इन्द्रियों की विवेचना करने लगे। और श्रवण करने वाले कौन? भयँकर वन के जितने प्राणी थे। प्रत्येक प्राणी आसन पर मौन हो गये। प्राण से सन्निधान कराने लगे। तो विचार क्या? महर्षि जब ये वर्णन करते कि वाणी अपने में श्रवण कर रहे थे, तो उनको अपनी वाणी का प्रतिपादन मानो उनकी वाणी से प्राणियों को सन्तोष दे रहे हैं। आश्वासन दे रहे थे कि यह वाणी है तुम्हारी। यह वाणी मैंने तुम्हारी जानी है। तो वे ऋषि-जन 'कण्ठम् ब्रह्मः लोकाः' तथा इस वार्ता को महाराजा शिव भी जानते थे।

महाराजा शिव का योग

तुम्हें प्रतीत है कि महाराजा शिव तथा उनकी धर्म देवी जो अपने में तपस्या में परणित रहते थे। दोनों पति-पत्नी तपस्या चर में रहते थे। ब्रह्मचर्य-व्रत में रहते थे। जब वे योग के क्षेत्र में पहुँचे। प्रत्येक इन्द्रियों को ओ३म् से बिंधा हुआ उन्होंने दृष्टिपात किया और श्रोत्रेन्द्रिय पर जब अनुसन्धान करने लगे तो इन श्रोत्र इन्द्रियों के द्वारा उनके कण्ठ में सर्पों की माला बन गई। सर्पों की माला बन गई तो मेरे प्यारे ! देखो ! वे सर्पराज उनकी वाणी के द्वारा जो शब्द उच्चारण होता तो उसे श्रवण करते रहते थे।

मेरे पुत्रो ! जो बाह्य-जगत् आन्तरिक-जगत् में त्रिगुण बन गया था, जिसे हमारे यहाँ रजोगुण, तमोगुण कहते हैं उसका योगी के द्वारा त्रिशुल बन करके रहता है। त्रिविद्या के रूपों में रहता है, त्रिशुल के रूप में वे दृष्टिपात आता है। **बेटा ! जो प्राण की ध्वनि हो रही थी, वे शिवजी का डमरू बन करके रहता है,** उसमें ध्वनि उत्पन्न हो रही है। वह ध्वनि ऋषि अपने में पान कर रहा था। मेरे पुत्रो ! जो संसार-रूपी जो जगत् है, **संकीर्णता-रूपी जो विष था, बेटा ! वो शिव ने उसे पान कर लिया।**

मेरे पुत्रो! आज; जब हम यौगिक क्षेत्रों में प्रवेश करते हैं तब हमें ये सब प्रत्यक्ष दृष्टिपात होने लगता है। यह संसार व्यापकता में ही तो अपने में ही दृष्टिपात आने लगता है और जब तक संकीर्णता रहती है तब तक मानव इस संसार में कुछ नहीं जान पाता। और जब व्यापकवाद आता है तो यह संसार ब्रह्माण्ड और पिण्ड एक सूत्र में पिरो करके इनके मनके बना करके इनको धारण कर लेता है।

मुनिवरो! देखो **सर्पराजों की माला क्या?** यह 'मनम् बृहिः कृताम् देवाः' मेरे पुत्रो देखो ! सर्पों की माला बन जाती है, आभूषण बन जाता है। उस आभूषण को अपना करके योगी निर्द्वन्द हो करके, निष्कपट, निर्भय हो करके वह अपने में समाहित हो जाता है। इस ब्रह्माण्ड को अपने में ही दृष्टि करने लगता है।

योगी

मेरे पुत्रो ! योगी किसे कहते हैं? योगी उसे कहते हैं जो विष को पान करने वाला हो। बेटा ! जो दुर्गुणों को, इस संकीर्णता को, अपने द्वारा उन्हें नहीं रहने देता। वह विष को पान कर लेता है। पान करने का अभिप्रायः क्या है? मानो उसे पान कर के उसे त्याज्य बना करके बेटा ! त्याग देता है। जैसे विवेक में, विवेकी पुरुष बेटा ! इस संसार-रूपी संसार को खारी बना करके त्याग देता है।

मानव को अनुसन्धान करने की प्रेरणा

मेरे पुत्रो ! देखो ! इसी प्रकार आज हमारा अपनी श्रोत्रेन्द्रियों के

ऊपर अनुसन्धान होना चाहिए। और वह प्राण रूपी देवता जब श्रोत्रेन्द्रियों को अपने द्वारा लाया तो उसको मृत्यु से पार कर दिया। वह मृत्यु से पार हो गया। कौन मृत्यु से पार हो गया बेटा ! श्रोत्रः। श्रोत्रेन्द्रियाँ जो पापाचार के शब्दों को ग्रहण कर रही थी। जो वासना में परणित हो रही थीं जो वासना रूपी शब्दों को ग्रहण कर रही थीं। वह इससे दूर हो गया। विचार क्या ! मुनिवरो देखो ! नाना ऋषि इस प्रकार के हुए हैं जिन्होंने बेटा ! बहुत अनुसन्धान किया है, विचार-विनिमय किया है, **विचारवान बनना ही मानव का कर्त्तव्य है पुत्रो!**

आओ बेटा ! आज का विचार-विनिमय क्या? मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूँ। विचार यह देने के लिए आया हूँ कि प्रत्येक इन्द्रिय पर हमारा अनुशासन होना चाहिए। प्रत्येक इन्द्रिय बेटा ! प्राण-रूपी सूत्र से ध्वनि से पिरोई हुई होनी चाहिए। जिससे हम प्राण देवता को अपने में अपना करके प्राणायाम् करके प्रत्येक इन्द्रिय प्राण से ओत-प्रोत होनी चाहिए।

मेरे पुत्रो ! आज का विचार-विनिमय क्या? हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए श्रोत्रेन्द्रियों को हम मृत्यु से पार ले जाएँ। मृत्यु इनके समीप न आ जाए क्योंकि श्रोत्रेन्द्रियाँ जब अशुद्ध शब्दों को ग्रहण करने लगती हैं, वासनामय शब्दों को ग्रहण करने लगती है तो ये मृत्यु से पिरोई जाती हैं। और जब ये दर्शनों में चली जाती हैं व्यापकता में प्रवेश हो जाती हैं, आकाश इसका देवता बन जाता है। दिशाएँ इसकी आभा बन जाती हैं, तो उस समय मेरे प्यारे ! ये श्रोत्र ही ब्रह्माण्ड और पिण्ड में दोनों को एक सूत्रीय आभा में परणित हो जाते हैं।

आओ ! मेरे पुत्रो ! आज का विचार-विनिमय क्या? मैं विशेष चर्चा तुम्हें नहीं प्रगट करने आया हूँ। विचार यह देने के लिए आया हूँ कि प्रत्येक मानव को अनुसन्धान करना है। प्रत्येक मानव जो संसार में आता है, यह मानव-शरीर जो मानव को प्राप्त होता है यह ब्रह्माण्ड और पिण्ड दोनों को एक सूत्र में लाने के लिए होता है। इसीलिए प्रत्येक मानव को, प्रत्येक मेरी मातृ शक्ति का मेरी पुत्रियों को सदैव इस मानव शरीर को जानते हुए हम यौगिकता में प्रवेश कर जाएँ।

मेरे प्यारे देखो ! इसको व्यापक प्रसारण ही कर तो रहे हैं। परन्तु प्रसारण करके अपने को इतना आकुँचन भी बना लें जिससे हम आकुँचन बन करके हम प्रभु की महिमा का गुणगान गा सकें। हम प्रभु की आभा का वर्णन कर सकें। मेरे प्यारे ! देखो ! ऋषिवर अपने में ही नहीं परन्तु इस संसार को अपने में दृष्टिपात करके ऊर्ध्वा कल्पना, आध्यात्मिक-विज्ञान में प्रवेश होना। उसमें आभायित होना प्रत्येक मानव का यह कर्त्तव्य है।

माता मदालसा का तप

मेरी प्यारी माता, मैं चाक्राणी की चर्चा भी करता रहता हूँ, माता मदालसा की चर्चा भी करता रहता हूँ। माता मदालसा जब विद्यालय में अध्ययन करती थी तो बेटा ! वे जब पूज्यपाद व्रेणकेतु ऋषि महाराज के द्वारा अध्ययन कर रही थीं तो बेटा! वो अध्ययन करती-करती वेद का मन्त्र ''श्रोत्रम् दधच्छता देवत्यम् लोकाः''। मानो यह जो शब्द-अश्रिका स्मरण आयी तो ऋषि से प्रश्न करने लगीं। ऋषि ने कहा इसके ऊपर साधना करो। तो बेटा ! मदालसा बारह (12) वर्ष तपस्या में परणित हो गई। तपस्या में जब परणित हो गईं, जब तप करने लगीं। तप किसे कहते हैं? **प्रत्येक इन्द्रिय को तपाना, प्रत्येक इन्द्रिय व्यापक-स्वरूप को जानने का नाम तप कहलाता है। उसके ऊपर अनुसन्धान करना, विचारने और उसके सूत्र में जिसका वो मनका है उसी सूत्र में पिरो देने का नाम तप कहा जाता है।**

अब मदालसा जब तपने लगी तो बारह (12) वर्ष पश्चात बेटा ! जब उसने इन्द्रियों को प्राणत्व में पिरोहित कर दिया तो जब वो श्रोत्र में पहुँची तो उसे ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आने लगा।

विराट-स्वरूप

मेरे पुत्रो ! देखो, ये शब्द, विचार भगवान् कृष्ण जी के द्वारा भी थे। वे भी इनको पिरोना जानते थे। मेरे प्यारे ! देखो ! इसीलिए भी

भगवान् कृष्ण ने अर्जुन को बृहद-रूप का (विराट रूप) वर्णन कराया था। इन्हीं रूपों में बेटा! बृहद्, जब छः (6) दिशा प्रतीत होने लगीं तो बेटा ! उसी में अग्नि व्याप्त हो रही है, उसी में अमृतगण विद्यमान है, उसी में मेरे प्यारे ! संवतसर विद्यमान हो रहा है। सर्वत्र ब्रह्माण्ड बेटा ! उसमें दृष्टिपात हो जाता है। तो मेरे प्यारे ! इसी से मानव का विराट-स्वरूप है। इस विराट-स्वरूप को भी जानना चाहिए।

आओ ! मेरे प्यारे ! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूँ। कल मुझे समय मिलेगा तो मैं आगे बेटा! एक मनका और रहा है उस मनके की चर्चा, तुम्हें चर्चा तो नहीं कर सकता; आज भी मैंने उस रूप से चर्चाएँ नहीं की। परन्तु कल बेटा ! मैं तुम्हें मन-रूपी मनके की चर्चा कल प्रगट करूँगा।

आज का विचार-विनिमय क्या? मुनिवरो! देखो प्राण ने उस श्रोत्रेन्द्रियों को मृत्यु से पार कर दिया। **बिना प्राण के बिना संसर्ग के हम ऊर्ध्वा में नहीं जा सकते। हमें ऊर्ध्वा में जाना है तो हमें अपने में वह जो दो वस्तुओं का संसर्ग हो रहा है जिनका विभाजन हो गया था। जिनके स्वरूप बन गये थे उन स्वरूपों को पुनः से हमें एक सूत्र में पिरोने के पश्चात् हम महान् और देवता बनेंगे।** यह है बेटा ! आज का वाक्य। अब मुझे समय मिलेगा, मैं शेष चर्चायें कल प्रगट करूँगा।

वेद पाठ----------

अच्छा भगवन्!

आनन्दित रहो!

दिनाँक : 22 अप्रैल, 1979

समय : प्रातः 8 बजे

स्थान : आर्य समाज, शक्तिनगर, अमृतसर

।। ओ३म् ।।

वाणी

जब उद्गीत गाने लगे तो उसके लिए कोई भी प्राणी हिंसक नहीं रहा। जब कोई प्राणी हिंसक नहीं रहा तो वह उद्गीत वाणी गाती रही, वाणी उद्गीत गाती रही। गाते-गाते महत्ता को प्राप्त होने लगे। परिणाम ''वृहीः कृताम् देवत्यम् लोकाः।'' मेरे प्यारे ! ब्रह्म लोकों में उनकी गति होने लगी। ऋषि का विचार एक महान् था।

मेरे पुत्रो! देखो जब वह उद्गीत गाने लगी उस समय **उद्गीत गाते-गाते वाणी में स्वार्थ भावना आ गई।** जब वाणी में स्वार्थ भावना आ गई तो मेरे पुत्रो ! वे जो मानव शरीर में जो असुर विद्यमान थे उन असुरों ने वाणी को छेदन कर दिया। जब वाणी छेदन हो गई तो अब ऋषि का जो ऊर्ध्वागति वाला जो सन्धि काल था वह अधोगति को प्राप्त हो गया। अब अधोगति को प्राप्त हो गया तो उसकी सन्ध्या की जो कड़ी थी, सन्ध्या के जो वृत्त थे, उनका विच्छेद हो गया। विच्छेद होने के पश्चात् मार्कण्डेय ऋषि महाराज मौन हो गए। तो मुनिवरो देखो ! ऋषियों ने यह कहा कि कोई भी मानव साधना में जाना चाहता है तो उसमें 'स्वार्थ-परता' नहीं होनी चाहिए। जिस भी काल में स्वार्थपरता हो जाती है उसी काल में असुर उसको छेदन कर देते हैं। तो इसीलिए मेरे प्यारे ! महर्षि मार्कण्डेय ऋषि महाराज, जब वाणी उद्गीत गा रही थी क्योंकि गान ही गान गा रही थी। बेटा! देखो प्रभु का गान गा रही थी। तो जब वह प्रकृति का गान गाने लगी, ध्रुवा-गति का गान गाने लगी, उसी समय उसकी ध्रुवा-गति हो गई, स्वार्थपरता हो गई। क्योंकि योगियों को, साधक को मुनिवरो ! जब जिस भी काल में स्वार्थपरता इन्द्रियों की आ जाती है, लोलुपता आ जाती है, उसी काल में उस मानव की गति ध्रुवा बन जाती है।

।। ओ३म् ।।

ऋषियों के उद्‌गार

1. आज हमें सबसे प्रथम अध्ययन के द्वारा, चिन्तन के द्वारा इस बाह्य जगत को विजय करना है।
2. बुद्धि, मेधा ऋतम्भरा, प्रज्ञा यह चार प्रकार की तरंगें बेटा! मनुष्यत्व की मानी जाती हैं।
3. यदि कोई मानव संसार में साधक बनना चाहता है उसके लिए दर्शनों का अध्ययन करना, वेदों का अध्ययन करना यह भी प्रियतम है। परन्तु जो हमने अध्ययन किया है उस अध्ययन के ऊपर हम यदि अपने जीवन को क्रिया में लाने का प्रयत्न करते हैं, क्रिया में ला देते हैं तो वह मानव की साधना बन जाती है।
4. जो साधक बनना चाहता है वह अपनी साधना को चिन्तन के द्वारा, आहार के द्वारा, व्यवहार के द्वारा, मुनिवरो! अपने विचारों को ऊर्ध्वा गति में ले जाना प्रारम्भ करता है।
5. हे मानव! तू साधना में परणित हो, तू साधना में रमणकर क्योंकि साधना ही तेरा जीवन है, साधना ही तुझे ऊँचा बनाती है।
6. मन और प्राण, दोनों आत्मा के गुण कहलाये गये हैं जिनको हम ज्ञान और प्रयत्न कहते हैं। क्योंकि प्रयत्न प्राण का अधिपति है और ज्ञान मन का अधिपति है।
7. मन और प्राण दोनों के मिलान का नाम साधना कहलाई जाती है।
8. मन को तुम्हें स्थिर करना है, मन से यदि संसार में शक्तिशाली वस्तु है तो वह प्राण है। इसलिए मन को प्राण में सन्निधान करो, जब यह मन और प्राण दोनों का सन्निधान होता रहता है तो आत्मा का जो गुण वह मानव को साक्षात्कार दृष्टिपात होता है और उसी से हम आनन्द का स्वादन करते हैं।
9. हमारे यहाँ ऐसे-ऐसे महापुरुष हैं जिन महापुरुषों का जीवन परम्परा से महान् और विचित्र रहा है। हमें उन्हें जानना है और साधना में रमण करते हुए इस संसार सागर से पार होना है।

OM

Conception of Yajna

In the discourses by Brahamrishi Krishna Dutta Ji
(In Trance)

Oh Sages ! as a routine our recitation of certain Vedic hymns was going on. You might be knowing that-The Ved mantras were marking out the precious treasures of Supreme God. This universe created by God is a sort of devotional hall **(Yajshala)**, in which every man, every woman and devakanya are displaying peculiar performances.

O my Holy God ! O Providence ! **(Vidhata)** in this charming yajna our life is sustained by your unique benevolence. Let our yajnas be grand. We all stand in need of reforming ourselves-these days. Being a real friend as you are, you alone are our reformer.

Oh ! purifier God! acknowledge our respectful obeisance so that our actions be adorned with grandeur and brightness day by day. O mighty God ! We are sure of the fact that in every walk our daily life is saturated by **yaj,** the fragrantly waves of our tendencies **(Parvariti)** spread in the atmosphere to make it lovely. In the same way, sitting in **Yajshala,** the recitor priest **Udgata** chants melodious Ved mantras, his voice spreads in the intervening space. The words and their meanings along with sweet smell purifies all the Devats **(Panchbhut)** O my noble preceptors! 0 sages! let us absorb ourselves in good lovely devotional actions **(yajkarame)**. O Sages ! Pondering over the adjustment of aims and working of Yajna, we find how much effort is required to attain it.

O Sages ! now I am to let you know the spheres of yajna, as Ved points out that he who meditates on God is also performing a very good **yaj.** To entertain a religious guest

according to means is also said to be a yajna. To render some thing good in the interest of the nation is also a graceful yajna. The place where different kinds of methods are going on in different yajnas a peculiar charm is pervading there. **Agnihotar** is sort of lovely yajna in which Brahma (Head-Priest) Udhvaru (Managing Priest) **udgata** (Recitor Priest) **Hota** (Oblation offering Priest) and **yajman** are selected. They perform lovely yajna methodically. The **Agnihotar** makes a man's life happy. Peace and prosperity appear there. Oblation is offered to Deties in yajna. In the position of yajman, husband and wife sit together to perform yajna. They lead their lives with austerity. The particles of oblation **(havya)** heated in the fire become subtle and powerful. In the same way O, Yajman you become devout and make yourself accurate. Performing yajna you will be powerful day by day worshiping and respecting holy persons and preceptors. My pious mothers, who regularly prepare their dear children in their wombs and go on training them upto School going age, are also performing good yajna. In the same way a King, who with noble fortitude tries to raise up his nation and make his subjects prosperous, this action too is a lovely yajna. In my opinion evary noble action or deed is a yajna. But what is that yajna in which delight is obtained in both the worlds **(Lok or Parlok).** That yajna is one in which a Brahma is selected and a yajman is selected. The wife of yajman urges her husband very politely. "O Yajman you are to perform a charming yajna I am with you. From this day you are to lead celibate life, practicing sacrifice and penance, sleeping on the earth you are to purify this devotional action. With your very conduct O'my lord! this yajna can be made charming 'with dedication and solicitation, then the yajna Succeeds otherwise, success is not achieved."

Pujyapad Gurudev

यौगिक प्रवचन के स्वामित्व व अन्य विवरण का ब्यौरा फार्म नं. 4 (नियम नं. 8)

1.	प्रकाशन स्थान	: दिल्ली
2.	प्रकाशन अवधि	: मासिक
3.	मुद्रक	: डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रसाद
	नागरिकता	: भारतीय
	मुद्रक का पता	: ए-59, पँचशील एन्कलेव, नई दिल्ली-110017
4.	प्रकाशक	: डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रसाद
	नागरिकता	: भारतीय
	प्रकाशक का पता	: ए-59, पँचशील एन्कलेव, नई दिल्ली-110017
5.	सम्पादक का नाम	: डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रसाद
	नागरिकता	: भारतीय
	सम्पादक का पता	: ए-59, पँचशील एन्कलेव, नई दिल्ली-110017

6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों। : वैदिक अनुसंधान समिति (पंजी.)

मैं डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रसाद एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रसाद

प्रकाशक के हस्ताक्षर

वैदिक अनुसंधान समिति (पंजी.)

सी-38, शिवालिक, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	80.00
2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	50.00
3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	50.00
4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	50.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	50.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	50.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	25.00
8.	आत्म-लोक	35.00
9.	धर्म का मर्म	30.00
10.	शंका-निवारण	30.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40.00
12.	आत्मा व योग-साधना	35.00
13.	देवपूजा	20.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	110.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	110.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	100.00
17.	रामायण के रहस्य	35.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	40.00
19.	महाभारत के रहस्य	25.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	35.00
21.	रावण-इतिहास	50.00
22.	महाराजा-रघु का याग	25.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	35.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	30.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	25.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	35.00
27.	पंच-महायज्ञ	30.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	30.00
29.	याग-मन्जूषा	25.00
30.	आत्म-दर्शन	30.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	25.00
32.	याग और तपस्या	45.00
33.	यागमयी-साधना	35.00
34.	यागमयी-सृष्टि	25.00
35.	याग-चयन	25.00
36.	दिव्य-रामकथा	110.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	25.00
38.	दिव्य-ज्ञान	35.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	80.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	25.00
41.	आत्म-उत्थान	30.00
42.	तप का महत्व	30.00
43.	अध्यात्मवाद	25.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	35.00
45.	वैदिक-प्रभा	30.00
46.	प्रकाश की ओर	35.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	35.00
48.	वैदिक-विज्ञान	35.00
49.	धर्म से जीवन	30.00
50.	आत्मा का भोजन	35.00
51.	साधना	30.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	40.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	40.00
54.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 6)	60.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	40.00
56.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 7)	60.00
57.	माता मदालसा	40.00
58.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 8)	60.00
59.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 9)	65.00
60.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 10)	70.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	80.00
62.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 11)	80.00
63.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 12)	80.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएं	50.00
65.	प्रभु दर्शन	50.00
66.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 13)	80.00
67.	समाज उत्थान का मार्ग	50.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम्, कर्म भूमि लाक्षागृह	10.00

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री विवेक त्यागी, अल्कापुरी, हापुड़, उत्तर प्रदेश	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	200 रुपये
डॉ. ओ.पी. आर्य, आगरा, उत्तर प्रदेश	125 रुपये
श्री गुलजार सिंह, जगत पुरी, कृष्णा नगर, दिल्ली	100 रुपये
श्रीमती वीना त्यागी, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश	100 रुपये
मास्टर कवन्धि, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ, अँकुर अपार्टमैन्ट, दिल्ली	101 रुपये

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को निरन्तर प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है :-

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली

बैंक खाता नं. - 0149000100229389, IFSC Code – PUNB–0014900

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

सँसार में उसी का जीवन उच्च है जो किसी का हो जाता है। जो किसी का नहीं होता वह संसार में अधूरा बना बैठा रहता है, देखो, जब तक ज्ञान रूपी अग्नि में आत्मा ने स्नान नहीं किया, अपने दोषों को भस्म नहीं किया, तब तक आत्मा परमात्मा से विमुख ही रहता है। भगवन्! इसी प्रकार जब तक हम अपने रूप को अग्नि में भस्म न कर देंगे, तब तक हमारा यथार्थ रूप देवताओं के समक्ष नहीं आयेगा, तथा तब तक हम सँसार का कोई उपकार न कर सकेंगे। यदि हम उपकार न कर सके तो हमारा जीवन निष्फल है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

(यज्ञ प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व)

वर्ष 43 : अंक : 510
मार्च 2015

मूल्य :
दस रुपये

प्रकाशक, मुद्रक : डा० मधुसूदनेश्वर प्रकाश (प्रकाशन मंत्री वै.अ.स.) द्वारा वैदिक अनुसंधान समिति पञ्जी०
के लिए नवप्रभात प्रिंटिंग प्रैस, दिल्ली से छपवाकर सी-38,
शिवालिक मालवीय नगर, नई दिल्ली-17 से प्रकाशित।
(अवै०) सम्पादक : डा० मधुसूदनेश्वर प्रकाश, दूरभाष : 26498737

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R. No. DL (S)-01/3220/2015-17
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2012-14
POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-03-2015
Published on 5th day of the same month

POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-03-2015
Published on 5th day of the same month